इदं पुस्तकं मुम्बय्या श्राकृ त्मज खेमराजश्रेष्ठिना स्वकीये " श्रीवेङ्कटेश्वर " मुद्रायन्त्रा-लयेऽङ्कितम्। संवत् १९५१ शके १८१६

जाहि

अञ्जननिदान वैद्यक । संस्कृत सूल सान्वय-भाषाटीका।

सम्पूर्ण सांसारिक मनुष्य दुःखकी हानि और सुख प्राप्तिकी इच्छाकरते हैं उसी दुःखकी हानि और सुखकी प्राप्ति करानेके निमित्त महर्षि अग्निवेशने इस ग्रंथको निम्मीण कियाँहै क्योंकि पुरुष रोगोंकी उत्पत्तिके कारणोंको न जानकर अज्ञानवश रोगोत्पादक पदार्थोंको यथारुचि मक्षण करते हैं और रोगी हो अनेक प्रकारके दुःखको भोगतेहैं-यद्यपि माधवानिदान, निषंदु वैद्यक इत्यादिमें इनका पूरा विवरण है परन्तु वे बहुत बहुत व क्लिष्टहोनेके कारण सर्वके समझमें नहीं आते इसलिये इस अत्युत्तम ग्रंथको बहुत सरल हिन्दुस्थानी भाषामें टीकाकराके हमने छापा है इसमें सब रोगोंकेलक्षण औषधियां लिखीहैं मूल्य ८ आना है।

पुस्तक मिछनेका ठिकाना-खिमराज श्रीकृष्णद्वास्त, "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापासाना-मुम्बई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by

रात.

बदान्त डिन्डिन:

गेशायनमः ॥ वेदांतिडिडि गै।। ब्रह्मेवात्मान देहादि। वेदांतांडेंडि क्तिनिबंधोऽन्यादिति

ज्ञात्र्वेय पदार्थों हैं। वे सकलक्षणी ॥ ज्ञाता ब्रह्म 9 नींवो वेदांतिडिडिमः ही umukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

9

खदुःखदौ॥श्रोतव्यं ब्रह्म नैव दितिवे०।।८॥ चित्याचित्यपदाथ विश्रांतिश्रांतिदायकौ ॥

0

वे० थिकियां वृथाला CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दान्मनोरथान्॥त्यक्तवैकं ब्रह्म मिति वे०॥ १४॥ स्थितो ब्रह्मा १५॥ जीवा ब्रह्मात्मनाज्ञ जीवात्मना परम् ॥ विज्ञानमिति वे०॥ १६ त्मना परं ब्रह्म श्रोतुरात्मतया स्थित वे० 3

वे०॥ २०॥ परोक्षासत्फलं कर्म ज्ञ सित्फलम् ॥ जानमेव दिति वे०॥ २१॥ वृथाश्रम ां व्याऽयं कर्मिणां श्रमः॥ यां निर्मिति वे०॥ ान्ब्रह्मणि ज्ञात इति वेदां० अलं वेदैरलंशास्त्रेरलं स्मृतिपुराणकैः।

परमात्मानि विज्ञात इति वे०॥ २४ वे० वे०॥२५॥कर्माणिचित्त ति वे० ॥ २६ ॥ संचि क्ष डाते वे० ranasi Collection. Digitized by eGangotri

हिं

8

ण्यकर्मणा वृद्धिनं हानिः पापकर्मणा। नित्यासंगात्मनिष्ठानामिति वे०।२८। गी तो पदार्थी द्वी पर

ते वे०॥ ३१॥ साकार वे० Q ब्रह्म इति वे०॥ नाहिप्रत्वं वेदपाउतः यं ब्रह्मविज्ञानादिति वे०॥ गना स्थितं ब्रह्म सवे ब्र

भासंते सर्ववस्तुषु॥ तस्मा सर्वमिति वे०॥३५ ॥ अवस्थात्रि डि।भूमितया स्थितम्।। तदेव ानीयादिति वे०॥ ३६ च नास्त्यंते तन्मध्ये वे०॥ ३७॥ यदस्त्यादौ यनमध्ये भाति तत्स्वयम्॥ ब्रह्मैवैकमि

ति वे ।। ३८॥ पुरु बे E ते वेदांत ।।।

हिं०

8

स्त्रिकम्।। इयं हित्वाश्रयेदेकमिति वे० ॥ ४२ ॥ देहों नाहमहं देही देहसाक्षी ति निश्चयात्॥ जन्ममृत्युप्रहीणोऽसा विति वे०॥४३॥ प्राणी नाहमहं देवः प्राणसाक्षीति निश्चयात् ॥ शुत्पिपासो पशांतिः स्यादिति वे०॥ ४४॥ मनो नाहमहं देवो मनःसाक्षीति निश्चयात्॥ शोकमोहापहानिः स्यादिति वे०॥४५॥

9 विद्वानिति वें ।। १८॥ नाहंम न तत्कार्यं न साक्षीपरमोऽस्म्यहम् CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञाते तत्त्वे कृतो दुःखिमिति वे०॥ ५० ॥ सासत्तात्मा न संदेह इति १॥ देहादिपंचकोशस्थ ।। सा स्फूर्तिरात्मा नैवान्य ति वे ।। ५२ ॥ देहादिपंचकोशस्था य

बे ब्रह्म इति वे०

५६ ॥ देहादिकोशगा सत्ता यासा ादिभ्तगा॥ मानाभावात्र तद्धेद इति वे०॥ ५७॥ सिच्चदानंदरूप द्वह्मैवात्मा न संशयः ॥ प्रमाणक संधानादिति वे०॥५८॥ न नामरूप ति सर्वत्र व्यभिचारतः ॥ रूपंसर्व स्यादिति वे०॥ ५९॥ नजीव ब्रह्मणोर्भेदः स्फूर्तिरूपेण विद्यते ॥ स्फू

वे॰ ति वे०॥ ६३॥ ब्रह्म सत्यं जग

निति वे०॥ ६४॥ अनामरू सकलं सन्मयं चिन्मयं परम्॥ भेदः कुतो बंध इति वे०॥ ६५ तत्त्वात्कथ्यते लोको नामाद्यैर्व्यभिच रतः॥बटुः कुलट इत्याद्यै रिति वे०६६॥ नामरूपात्मकं विश्वमिद्रजालं धाः ॥ अनामत्वाद्युक्तत्त्वादिति

वे० ॥६७॥ अभेददर्शनं मोक्षःसंसारो भेद ॥ सर्ववेदांतसिद्धांत इति वे० 90 तिवे ।। ६९ ॥ नकाम्यप्रतिषिद्धाभिः कियाभिमों क्षवासनाई श्वरान्यहा ादिति वे॥७०॥ अविज्ञातेजन्म नष्टं विज्ञातेजन्मसार्थकम्॥ज्ञातुरा CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देतिवे ।। ७१।। दशमस्यपारंजा सोस्ति यथा तथा॥ स्वस्य ब विज्ञान इति वेदां०॥ ७२ ौपाधिकान्दोषान्गृह्यंते। यथा॥ उपेक्ष दश्यं यद्भ इति वेदांत० ॥ अनंतं ब्रह्मनिष्ठ मिति वे०॥ ७४॥ धनैर्वा धनदैः पुत्रैद् CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे० 99

तिरिति वे० ॥ ७८॥ नवभ्योस्तिपरं त्यङ्नव वेद परं परम्।। तिद्रज्ञानाद्र र्या मिक्तिवेदां ।। ७९॥ नवाभासा त्त्वान्नवोपाधीन्नवात्मना याज्ञात्वावशिष्टे तु मौनं वे०॥८०। ण स्वस्विन्प्रविलाप्यांखिलं ॥ गायन्नद्वेतमात्मानमास्ते ॥ ८१ ॥ प्रतिलोमानुलोमाभ्यो

ग्वादयोः॥ चितने वे० 35 CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri